इस प्रकार व्यावसायिक पाठ्यसामग्री के अंतर्गत कई छोटे-छोटे संस्थानों के द्वारा आर्थिक विकास के प्रति स्वयं जागृत करने के साथ-साथ कई ऐसे गतिविधियों में अभिभावकों को सम्मिलित किया जाता है जिनका आधार पाठ्यवस्तु या पाठ्यसामग्री होती है जो कई ज्ञान-विज्ञान के विषयों के अनुभवों से अभिभावकों को जोड़ती चली जाती है। और पाठ्यवस्तु के अध्ययन-अध्यापन से अभिभावकों को भाषा पर अधिकार भी होने लगता है। व भाषा के प्रवाह को समझने लगते हैं। जिन कारणों से वे परिवर्तन ला करके वे अपना हित कर जाते हैं।

अतः समाज एवं राजनीति के आधार पर व्यावसायिक पाठ्यसामग्री शिक्षार्थियों को अनेकों ऐसे अवसर प्रदान करती है जो शिक्षा ज्ञान के साथ-साथ आर्थिक स्तर पर भी उन्हें परिपक्व बनाते हैं।

Page No.
Date

को कक्षा गतिविधियों में सम्मिलित होने के अवसर भी देती है, रणनीति के बहुत अध्यापक यह भी निर्धारित करते हैं कि अधिगम स्थल में विषय की व्यवस्था, विद्यार्थी समूहन की अंतः अवसर, पाठ्यक्रमीय गतिविधि, समस्याओं की पहचान निर्धारण, उन समस्याओं को हल करने में उनके मूल उनके सर्वोचित समाधान हेतु विभिन्न - विभिन्न प्रकार से कार्य करते हैं। रचनावादिता द्वारा विषय वस्तु को सरल एवं सार्थक ढंग से प्रस्तुत करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के स्वयं आधार एवं नवीन (ज्ञान) आधार में वृद्धि करने का भी प्रयास किया जाता है, व्यक्तियों को जीवन की कला के साथ-साथ विचारों की सामाजिक सांस्कृतिक के विकास में भी सहायता होती है। यह रचनावादिता अध्यापकों की स्वतन्त्रता में एवं नैतिकता स्तर में दोनों प्रकार से होते हैं, रचनावादी जहाँ कक्षा की सफलता की जाँच की जाती है वहीं विद्यार्थी अपनी योग्यता को सामाजिक स्तर पाठ्यक्रम से सरलता से सीखते हैं व कुछ नये ज्ञान को जन्म भी स्वयं कार्य करता नजर आता है। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य करता नजर आता है, व्यवस्थापक पाठ्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से निम्नलिखित सोपान उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं:—

आरेखा एक पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण हेतु बनायी गयी रणनीति के तहत पाठ योजना में कई महत्वपूर्ण बिंदु सम्मिलित होते हैं और प्रत्येक बिंदु भिन्न-2 रूपों में शैक्षिक निहितार्थ तथा बौद्धिक विकास का कार्य करते नजर आते हैं। जहाँ आरेखा के प्रारंभिक चरण में प्रस्तावना विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान को जानने तथा पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने का कार्य करती है वहीं आदर्शवाचन, अनुकरण वाचन आदि दक्षता विकास में सहायक होते हैं। श्रवण द्वारा विषयवस्तु का श्रवण, ग्रहण एवं मनन का अवसर देते हैं तो वहीं अनुकरण वाचन आदि उच्चारण, त्रुटि संशोधन